नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक.....

दिनांक : 22-10-2019

प्रकाशनार्थ

(अशफाक उल्ला खाँ जयन्ती के अवसर पर आयोजित हुआ व्याख्यान कार्यक्रम)

महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के प्रार्थना सभा में **अशफाक उल्ला खान के जयन्ती** के अवसर पर उद्‌बोधन देते **डॉ. अजय कुमार निषाद** ने कहा कि असफाक उल्ला खाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारी थे और स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उनका नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है । भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सम्पूर्ण इतिहास में अशफाक की भूमिका निर्विवाद रूप से हिन्दू–मुस्लिम एकता का अनुपम आख्यान है। चौरी–चौरा कांड के बाद जब महात्मा गांधी ने अपना असहयोग आंदोलन वापस लेने से अशफाक उल्ला खाँ भी बहुत दुखी हुये और उन्होने अंग्रेजो को जल्द से जल्द भारत से निकालने का प्रण करते हुए अन्य क्रांतिकारियों से साथ मिलकर भारत माता को स्वतंत्रत कराने का बिड़ा उठा लिया। राम प्रसाद बिस्मिल ने अंग्रेजी सरकार के धन को लूटने का निश्चय किया. उन्होंने सहारनपुर–लखनऊ 8 डाउन पैसेंजर ट्रेन में जाने वाले धन को काकोरी में लूटने की योजना बनाई. 9 अगस्त, 1925 को राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में अशफाक उल्ला खां समेत आठ अन्य क्रांतिकारियों ने इस ट्रेन को लूटकर भारत के वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अंग्रेजो के समक्ष कड़ा प्रतिकार प्रस्तुत किया। उन्हे ट्रेन को लूटने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया और अंग्रेजी सरकार द्वारा उन्हे फाँसी पर लटका दिया गया। अशफाक उल्ला खाँ हमेशा–हमेशा के लिए भारत माता के अमर सपूत के रूप में आज भी प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणादायी है।

(अंग्रेजी विभाग में आयोजित निबंध प्रतियोगिता)

लेखन कौशल से विद्यार्थियों में अपने विचाराभिव्यक्ति का विकास के साथ–साथ तर्क शक्ति एवं कल्पनाशक्ति का भी विकास होता है। सोचने समझने की शक्ति विकसित होती है। अशुद्धियॉ दूर तथा व्याकरण का विकास होता है। **'ब्रेन ड्रेन'** विषय पर अंग्रेजी विभाग में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्रों को संबोधित करते हुए अंग्रेजी विभाग प्रभारी **कविता मंध्यान** ने कहा निबन्ध लिखने के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है–भाव एवं भाषा, इन दोनों के बिना निबंध लेखन संभव ही नहीं है। बिना संयत भाषा के अभिप्रेरित भाव व्यक्त नहीं होता। लिखने के लिए जिस प्रकार भाव की आवश्कता है उसी प्रकार सधी हुयी भाषा की भी। एक के अभाव में दूसरे का महत्व नहीं है भाव और भाषा को समन्वित करने के ढंग को शैली कहते है।

निबंध में व्याकरण के नियमों और विराम चिह्नों का उचित प्रयोग वाक्यों का छोटा तथा प्रभावशाली होना, सभी अनुच्छेदों का एक दूसरे से जुड़ा होना तथा ठीक स्थान पर सही मुहावरों का प्रयोग निबन्ध को प्रभावशाली बनाता है। महाविद्यालय के 60 छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया। निबन्ध प्रतियोगिता में **प्रथम स्थान पर** आदित्य प्रताप सिंह बी. ए. द्वितीय वर्ष, **द्वितीय स्थान पर** सर्वेश्वरकांत चन्द्रा एवं प्रियंका श्रीवास्तव बी. ए. द्वितीय वर्ष **तृतीय स्थान पर** विमलेन्दू बी. ए. प्रथम वर्ष रहे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी